Vol 9, Issue 1, 2026 **Impact Factor: 8.535** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2026.9.1.9019

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

प्राचीन भारत के आर्थिक इतिहास का अध्ययन

Dr. Santosh Kumar Jha, Scholar History

भूमिकाः–

जब किसी राज्य अथवा राष्ट्र के निवासी कृषि उत्पादन एव संचयंन प्रारम्भ कर देते है तभी उस राज्य अथवा राष्ट्र की सुव्यवस्थित संरचना प्रारम्भ होती है। भारतीय उपमहाद्वीप के संदर्भ में यह स्थिति हमें हड़प्पा संस्कृति से दिखलाई पड़ती है। प्राचीन भारत के आर्थिक इतिहास का प्रारम्भ सिंधु घाटी सभ्यता से ज्ञात होता है जो गुप्त काल तक गहन व्यपारिक गतिविधियों व शहरी विकास के रूप में भारतीय उपमहाद्वीप की गतिमान अर्थव्यवस्था का घोतक रहा। राजनीतिक एकता, सुरक्षित सीमाओं, सुदृढ़ अन्न व परिवहन व्यवस्थाओं व कृषि क्षेत्र में लगातार होने वाली गुणात्मक वृद्धि ने व्यापार व वाणिज्य को प्रोत्साहित किया व कृषि उत्पादकता को बढ़ाया। उदाहरण स्वरूप 600 ई0 पू0 के आस पास महाजनपद पंच के रूप में सिक्कों को ढाला जाना प्राचीन भारतीय इतिहास के आर्थिक पटल की मजबूती को प्रदर्शित करता है।

आर्थिक जीवन किसी भी समाज की सर्वमुखी अभिवृद्धि का आधार होता है। पुरूषार्थो में 'अर्थ' की गणना भी इसी तथ्य को इंगित करती है। इसे हम विडम्बना ही कहेगें कि भारतीय इतिहास विशेषकर प्राचीन भारतीय इतिहास एवं उसकी चिन्तन परम्परा को आध्यात्मिक घोषित करते हुए आर्थिक विवेचना के लिये अक्सर अनुपयोगी एवं निरर्थक मान लिया जाता है। जबकि यदि सूक्षम स्तर पर सार्थक अध्ययन किया जाये तो हम पाऐगे कि भारतीय इतिहास में व इसके विभिन्न आयामों में सतत् गतिशीलता व निरतरंता है। प्राचीन भारत के आर्थिक इतिहास व अर्थव्यवस्था के विषयक अधिकांश चर्चा समकालीन पुस्तकों के साक्ष्यों के आधार पर होती रही है चाहे वो भारतीय स्रोत हो अथवा विदेशी यात्रियों के वृतान्त। समकालीन रचनाओं के साथ–साथ प्राचीन अभिलेख व अन्य साक्ष्य भी प्रमाणिक रूप से इस काल के इतिहास व उसके आर्थिक पहलू का बोध कराते हैं। इन्हीं बिन्दुओं पर केन्द्रित अध्ययनों द्वारा प्राचीन भारतीय इतिहास के आर्थिक पक्ष की विशद् जानकारी उपलब्ध होती है। उदाहरण स्वरूप धार्मिक प्रयोजनों में किये गये दान, यज्ञ आदि के विषय में उपरोक्त साक्ष्यों से जो प्रमाणिक जानकारी हमें मिलती है उन पर गहन अध्ययन हुआ है परन्तु अनेक बिन्दुओं के सापेक्ष में अर्थव्यवस्था के अंतर्गत भूमि तथा उससे जुड़े पक्ष जैसे कृषि,

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

सिंचाई व्यवस्था, व्यापार व वाणिज्य, राजस्व प्रबन्धन, दुर्भिक्ष व आपदा प्रबन्धन, राजस्व व्यवस्था व राजस्व प्रबन्धन आदि के बारे में व्यवस्थित अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। इस शोध के माध्यम से मेरा विनम्र प्रयास होगा कि प्राचीन भारतीय इतिहास के आर्थिक पहलू के विभिन्न बिन्दुओं पर औचित्यपूर्ण शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कर सकूं।

अध्ययन का औचित्यः–

इतिहास अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयासरत मनुष्य की गतिविधियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इस गतिविधि का मूल आर्थिक है और आर्थिक निर्धारणवाद का सिद्धान्त यह विचार प्रस्तुत करता है कि भौतिक उत्पादन मानवजाति के इतिहास का आधार है और उस इतिहास के किसी अंश को उस काल के उद्योग को ज्ञान के बिना समझा नहीं जा सकता है। आर्थिक उत्पापदन की शक्तियां एवं सम्बन्ध धर्म, दर्शनों, सरकारों, कारनों और नैतिक नियमों के उस स्वरूप को निर्धारित करते है जिसे मनुष्य स्वीकार करते हैं।

अपने अस्तित्व के सामाजिक उत्पादन में मनुष्य अपरिहार्य रूप से कुछ निश्चित सम्बन्ध स्थापित करते हैं जो उनकी इच्छा से स्वतन्त्र होते है। ये उत्पादन के सम्बन्ध उनके उत्पादन की भौतिक शक्तियों के विकास में किसी खास चरण के लिए उपयुक्त होते हैं। उत्पादन के इन सम्बन्धों की सम्पूर्णता सामज के आर्थिक ढांचे का निर्माण करती है। यही वह वास्तविक आधार है जिस पर वैधानिक एवं राजनैतिक अधिरचना विकसित होती है और जिसके साथ सामाजिक चेतना निश्चित स्वरूप जुड़े होते है। भौतिक जीवन की उत्पादन पद्धति सामाजिक, राजनैतिक और बौद्धिक जीवन की सामान्य प्रक्रिया को निर्धारित करती है। मनुष्यों की चेतना उसके अस्तित्व को निर्धारित नहीं करती, अपितु उनका सामाजिक अस्तित्व उनकी चेतना को निर्धारित करता है।

अध्ययन का उद्देश्यः–

शोध अध्ययन के माध्यम से शोधार्थी उन उद्देश्यों को प्रकटीकरण करने की कोशिश करेगा जिसे अभी तक प्रकट नहीं किया जा सका है। आजीविका के साधनों के उत्पादन में मनुष्य किस प्रकार प्रयास करके अधिकतम संतोष प्राप्त करता है वे आर्थिक इतिहास के प्रमुख उद्देश्य होते हैं। आर्थिक इतिहास के क्षेत्र में मनुष्य के कार्यो को प्रभावित करने वाले विचार, समाज का उद्देश्य, विभिन्न सामाजिक वर्गो का पारस्परिक सम्बन्ध तथा व्यवहार का अध्ययन आदि विषय होते हैं।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

शोधार्थी का यह प्रयास होगा कि वह देखें कि किस प्रकार आर्थिक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप किस प्रकार सामाजिक सम्बन्धों तथा मानवीय व्यवहार में परिवर्तन हो रहे हैं। शोधार्थी का अध्ययन इतिहास की आर्थिक इतिहास की व्याख्या तथा कार्यो के परिवेश से सम्बन्धित है। मनुष्य ने आजीविका के साधनों के उत्पादन में अधिकतम संतोष प्राप्त करने के लिए क्या किया, यही आर्थिक इतिहास है। तकनीकी यंत्र तथा कारखानों द्वारा उत्पादित पदार्थो से यह स्पष्ट हो जाता है पदार्थ का अन्तिम स्वरूप सामूहिकता तथा संगठन का परिणाम होता है। श्रम, अभियन्ताओं, भूगर्भशक्तियों तथा पूँजीपतियों के सहयोग से किसी वस्तु का उत्पादन अभाव है। वस्त्र उत्पादन में किसान, यंत्र, श्रम तथा पूंजीपति के पारस्परिक सहयोग की अपेक्षा होती है। शोधार्थी का कर्तव्य है कि इन सभी पक्षों पर विचार करेगा। इस प्रकार शोधकर्ता का उद्देश्य नवीन तथ्यों की खोज करना, उपलब्ध तथ्यों का संशोधन करना तथा नवीन साक्ष्यों के आधार पर अतीत की घटना का यथार्थ एवं परिकल्पनात्मक प्रस्तुतिकरण होता है। इस प्रकार नवीन साक्ष्यों के आलोक में घटना के महत्व तथा उसके अर्थ को स्पष्ट करना, घटना के सम्बन्ध में प्रचलित जातियों को दूर करना तथा तत्कालीन सामाजिक मूल्यों के परिवेश में तथ्यों की व्याख्या करना शोधकर्ता का उद्देश्य होगा।

शोध परिकल्पनाः–

आर्थिक कारण इतिहास की आधारशिला है, यदि इतिहास मनुष्य के कार्यो तथा उपलब्धियों की कहानी है तो यह नितान्त सत्य है कि मनुष्य भौगोलिक परिस्थितियों एवं वातावरण के अनुसार कार्य करता है। परिणाम स्वरूप मनुष्य के कार्यो का कारक भौगोलिक परिस्थितियां तथा वातावरण होता है। मानवीय इतिहास इन्हीं कारणों का परिणाम होता है। शोधार्थी द्वारा आर्थिक साधनों के घटनाक्रम में नहीं अपितु कारणों की क्रमवद्धता को प्रकट करने की चेष्टा होगी। कार्य कारण सम्बन्ध से यह निश्चय करने की कोशिश होगी जो परितर्वन दिखायी दे रहे है उसके सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक परिस्थितियां के स्पष्ट प्रभाव को ढूढा जा सकता है। शोधार्थी के रूप में उन तथ्यों की गणना होगी जिनके परिणाम स्वरूप प्रगति, विकास तथा पतन होता है तथा उन शक्तिशाली प्रवृत्तियों का उल्लेख होगा जिन्होंने विभिन्न युगों की परिस्थितियों का प्रभावित किया है। तथ्यों को परीक्षण इस ढंग सम्भव किया जा सकेगा जो सदैव वर्तमान से जुड़ा हो। वर्तमान कालिक जीवन में अभिरूचि से ही इस शोध को समसामाजिक दृष्टि बनाने की कोशिश होगी।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

निर्दशन पद्धतिः–

प्रत्येक शोधार्थी वर्तमान के सन्दर्भ में अतीत का स्पष्टीकरण करता है। स्पष्टीकरण का अभिप्राय कारणों की व्याख्या तथा उनकी क्रमवद्धता को निश्चित करने का प्रयास शोधार्थी का होगा। अतीत का आलोचनात्मक तथा सारांशयुक्त प्रस्तुतीकरण करना ही विश्लेषणात्मक अध्ययन है। शोधार्थी तथ्यों का विश्लेषण करते हुए उसका संरलेषण स्वरूप प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा। एक युग से दूसरे युग के घटनाक्रम में हुए परिवर्तनों की कई स्तरों पर तुलना करना ही तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य होता है अतः शोधकर्ता विभिन्न कारणों का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक व सांस्कृतिक दृष्टि से तथ्यों का तुलनात्मक अध्ययन करके अर्थ व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करूंगा। अन्त में शोधकर्ता आलोचना सिद्धान्त की दीक्षा का प्रयोग करके उच्च स्तरीय आलोचना के लिए सकारात्मक व नकारात्मक आलोचना का प्रयोग शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध में समान किया जा सकेगा।

शोध कार्य में सहायक उपकरण –

1. विद्वानों व गुरूजनों का सानिध्य
2. मूल ग्रन्थ, व्याख्या ग्रन्थ, शिलालेख, शासकीय अभिलेख
3. इतिहास ग्रन्थ, कैटलाग्स, कोश ग्रन्थ
4. सम्बद्ध ग्रन्थ तथा शोध पत्र व पत्रिकाएं
5. पुस्तकालय
6. अन्तर्जाल, ई–सामग्री, कम्प्यूटर
7. विद्वानों के व्याख्यान व परिचर्चा
8. पाण्डुलिपियाँ
9. मित्रों का व कुटुम्बीजनों का सहयोग

संदर्भ ग्रन्थ सूची

हिन्दी ग्रन्थ

1. पाठक विशुधानन्द प्राचीन भारतीय आर्थिक इतिहास (प्रारम्भ से 600ई0 तक) उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ।
2. गुप्त परमेश्वरी लाल प्राचीन भारतीय मुद्राएं, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

3. थापड रूमिला भारत का इतिहास राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

4. गौतम एस0एस0 (सम्पा0) बुद्धयुगीन भारत गौतम, गौतम बुद्ध सेन्टर, नई दिल्ली।

5. मुखर्जी राधा कुमुद चन्दगुप्त मौर्य और उसका काल, राज कमल प्रकाशन नई दिल्ली।

6. मुखर्जी राधा कुमुद हिन्दी सभ्यता, राज कमल प्रकाशन नई दिल्ली।

ENGLISH SOURCES:

1. Warder. A. K; Indian Buddhism, Delhi: Motilal Banarsi dass, 2000

2. Adhya, G.L; Studies in the Economic life of Northern and western India (200 B.C – 300 A.D), Bombay, 1966

3. Agarwala, V.S; India as Known to PÈnini, Allahabad, 1971.

4.. Kosambi D.D; The Culture and Civilization of Ancient India in Historical Outline, Delhi: USB Publishers, 2008

5. Jha. D.N; Ancient India (An Introductory outline), Delhi: Manohar, 1997.

6. Rapson E.J.; Ancient India (From Earliest Times to the First Century A.D), Calcutta: 1960.